म्हारा सावरा गिरधारी खीचड़ खाले रे बनवारी
कर्मा विनती कर कर हारी बेटी जाटा री

बाबो दूजे गांव सिधायो थारो मंदिरियो संभलायो
सारी पूजा ढंग सिखायो बेटी जाटा री

बेटी तड़के उठ के आईये म्हारे गिरधर ने नुहवाईये
पूजा करके भोग लगाइये बेटी जाटा री

मीठे पानी से नहलाईये ऊँचे आसन पर बैठाइए
लंबो केसर तिलक लगाइये बेटी जाटा री

जड़ के मंदिरिये में ताली कर्मा गीत गावति चाली
ल्याई खिचडलो भर थाली बेटी जाटा री

म्हारी भूल बता दयो सारी थे क्यों रुस्या कुञ्ज बिहारी
म्हाने गाल्या पड़सी खारी बेटी जाटा री

बाबो बार गाव से आवे म्हाने मुक्का से धमकावे
कर्मा आंसूड़ा ढल कावे बेटी जाटा री

सांवरा छाछ राबड़ी ल्याऊं मीठी गुड़ली खीर बनाऊ
उठके भोरा भोर जिमाउ बेटी जाटा री

आ के गर्दन काट चढाऊँ या ज़हर खाय मरजाऊ
तो भी थाने आज जिमाउ बेटी जाटा री

पर्दो धाबलियो रो कीन्ह्यो मोहन खिचडलो खा लीन्हयो
भोला भगतां दर्शन कीन्ह्यो बेटी जाटा री

बोल्या ठाकुर मीठी वाणी म्हाने पा दे ठंडो पानी
कर्मा थारी प्रीत पिछानी बेटी जाटा री

पाछो गाव चौधरी आयो कर्मा सारो हाल सुनायो
सुन के घणो अचम्भो आयो बेटी जाटा री